Badal Saraswat
@badal_saraswat • May 29, 2021 • 7 tweets

Share Twitter Download

#काँग्रेस_के_कुकर्म Vs #इतिहास_ही_हमारी_धरोहर_है

☝ #काँग्रेस😠के वामपंथी विचारधारा के चाटुकार इतिहासकारों ने सच्चे इतिहास को चाहे कितना भी दबा दिया हो😠😠😠

☝ काँग्रेस चाहे कुछ भी कर ले,लेकिन देर से ही सही सत्य तो बाहर आ ही जाता है✔

"भगतसिंह जी"❤और"वीर सावरकर जी"❤

Read👇👇👇

राहुल आर्य बड़े भईया जी का लेख✍️✍️✍️

👉पहले पूरा पढ़ लेना फिर निर्णय करना👈

☝️ जब सावरकर 43 साल के थे,तब शहीदे आजम "भगत सिंहजी " 19 साल के थे...
☝️ 19 साल के युवा "भगत सिंहजी"ने 43 वर्ष के "वीर सावरकर जी" की प्रतिबंधित किताब को चोरी छिपे प्रकाशित करवा कर उसको लोगो में बंटवाया...

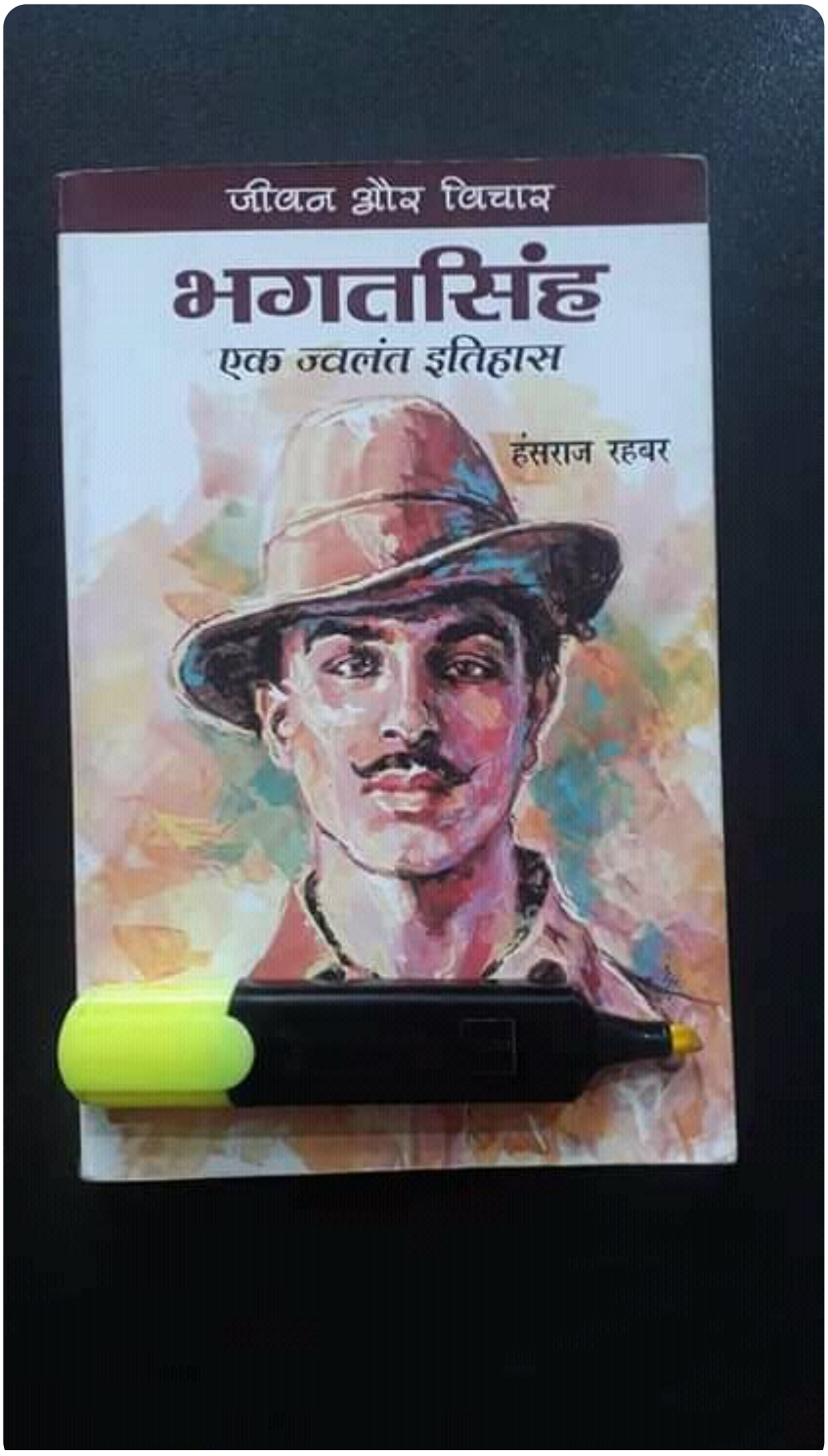

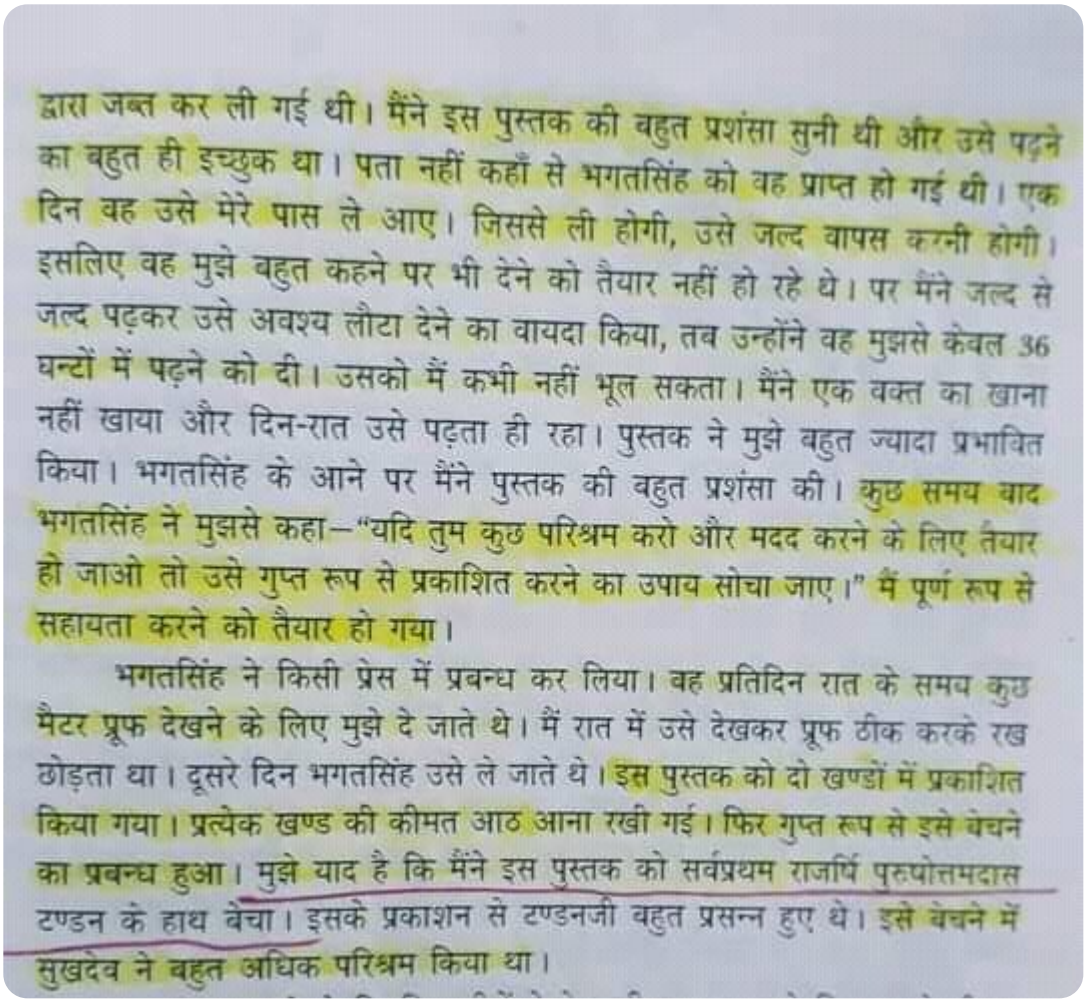

द्वारा जब्त कर ली गई थी। मैंने इस पुस्तक की बहुत प्रशंसा सुनी थी और उसे पढ़ने का बहुत ही इच्छुक था। पता नहीं कहाँ से भगतसिंह को वह प्राप्त हो गई थी। एक दिन वह उसे मेरे पास ले आए। जिससे ली होगी, उसे जल्द वापस करनी होगी। इसलिए वह मुझे बहुत कहने पर भी देने को तैयार नहीं हो रहे थे। पर मैंने जल्द से जल्द पढ़कर उसे अवश्य लौटा देने का वायदा किया, तब उन्होंने वह मुझसे केवल 36 घन्टों में पढ़ने को दी। उसको मैं कभी नहीं भूल सकता। मैंने एक वक्त का खाना नहीं खाया और दिन-रात उसे पढ़ता ही रहा। पुस्तक ने मुझे बहुत ज्यादा प्रभावित किया। भगतसिंह के आने पर मैंने पुस्तक की बहुत प्रशंसा की। कुछ समय बाद भगतसिंह ने मुझसे कहा—"यदि तुम कुछ परिश्रम करो और मदद करने के लिए तैयार हो जाओ तो उसे गुप्त रूप से प्रकाशित करने का उपाय सोचा जाए।" मैं पूर्ण रूप से सहायता करने को तैयार हो गया।

भगतसिंह ने किसी प्रेस में प्रबन्ध कर लिया। वह प्रतिदिन रात के समय कुछ मैटर प्रूफ देखने के लिए मुझे दे जाते थे। मैं रात में उसे देखकर प्रूफ ठीक करके रख छोड़ता था। दूसरे दिन भगतसिंह उसे ले जाते थे। इस पुस्तक को दो खण्डों में प्रकाशित किया गया। प्रत्येक खण्ड की कीमत आठ आना रखी गई। फिर गुप्त रूप से इसे बेचने का प्रबन्ध हुआ। मुझे याद है कि मैंने इस पुस्तक को सर्वप्रथम राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन के हाथ बेचा। इसके प्रकाशन से टण्डनजी बहुत प्रसन्न हुए थे। इसे बेचने में सुखदेव ने बहुत अधिक परिश्रम किया था।

☝ ताकि लोगो को 1857 की क्राँति का इतिहास पता लग सके...!!!

☝ मेरी मान्यता ये है कि जो भी क्राँतिकारी हैं उनको आज के दौर की वाहियात राजनीति से दूर रखा जाए...!!!

☝ भगत सिंह जी, वीर सावरकरजी से प्रभावित थे,
☝ यह बात कुछ लोग जानपूछ कर नहीं सुनना चाहते...
☝ क्योंकि ऐसा करने से उनको

वीर सावरकर जी के संघर्ष को स्वीकार करना पड़ेगा...!!!

☝ एक क्राँतिकारी का दूसरे क्राँतिकारी से प्रभावित होना स्वाभाविक सी बात है...!!!

☝ मगर कुछ विचार शून्य लोग सावरकर के संघर्ष को स्वीकार करने के बजाय भगत सिंह जी से ही कन्नी काटना अच्छा समझते हैं ।।।

...: : :

☝ मगर झूठ को सौ बार

दोहराने से वह सच तो नहीं हो जाता...
☝ मगर कुछ बेचारे कमजोर लोग झूठ को सौ बार सच बनाने के ख्वाबो में अपना भविष्य तलाश रहे हैं...!!!

☝ भगत सिंहजी इस देश के युवाओं के लहू में हलचल पैदा करने वाले सशक्त पात्र हैं...

☝ पोस्ट का अर्थ राष्ट्र के प्रति सर्वस्व अर्पण करने वाले महापुरुषों

को उस दायरे से निकालकर लाने का है जिस दायरे में छोटी और स्वार्थी मानसिकता वाले अपंग लोगो ने उन्हे बाँध दिया है..!!!

☝ कुछ लोग शहीदे आजम "भगत सिंहजी" की जय केवल ☝ इसलिए नहीं बोलना चाहते कि उनका परिवार आर्य समाजी था और वो सावरकर जी से प्रभावित थे...!!!
☝ किन्तु छोटी मानसिकता के

इन मानसिक लंगड़े लूलों का जीवन झूठ को सच में बदलने की बेकार कोशिशो में ही बीत जाएगा...!!!
☝ मगर साँच को आँच कहाँ ???

👉शहीदे आजम भगत सिंह जी का बलिदान भी हमेशा जिंदा रहेगा और वीर सावरकरजी का संघर्ष भी मार्गदर्शन करता रहेगा 👈

Rahul Arya...!!!

⏳⏳⏳

# Badal Saraswat

@badal_saraswat

झूठी शान के परिंदे ही ज्यादा फड़फड़ाते हैं बाज़ की उडान में आवाज़ नहीं होती तजुर्बों ने सिखाया है शेरो को शिकार करना यूं बेवजह दहाड़ मारकर शिकार किया नहीं जाता..

Follow on Twitter